अध्याय –I

पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता
(PHYLOSOPHY OF THE TEXT BOOK)

1) पाठ्यपुस्तक का आमुख

2) पाठ्यपुस्तक के मुख्य सिद्धांत

3) पाठ्यपुस्तक में छात्रों के लिए सूचनाएँ

4) पाठ्यपुस्तक में अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

5) पाठ्यपुस्तक की विषय सूची, विधा विशेष

6) पाठ्यपुस्तक में पाठों का निर्माण

7) पाठ्यपुस्तक संसाधन

8) पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मापदंड

9) पाठ्यपुस्तक में परियोजनाएँ

10) पाठ्यपुस्तक में मूल्यांकन

I पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता

1) पाठ्यपुस्तक का आमुख

आमुख को पाठ्यपुस्तक का प्रतिबिंब कहा जाता है। इसे पढ़कर हम पाठ्यपुस्तक में निहित सामग्री की ढेर सारी बातों के बारे में अनुमान लगा सकते हैं। दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक सुगंध - 2 के आमुख के प्रस्तावित अंश निम्नलिखित हैं :-

- एन.सी.एफ.-2005, आर.टी.ई. - 2009 तथा आधार पत्र - 2011 के सुझावों के आधार पर पाठ्यपुस्तक के सृजन पर प्रकाश डाला गया है।
- त्रिभाषा सूत्र के अनुरूप पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है।
- बच्चों के किताबी ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने और अर्जित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करने तथा नवीन ज्ञान का संबंध पूर्व ज्ञान से जोड़ने के लिए विभिन्न विधाओं (गीत, कहानी, साक्षात्कार, पी.पी.टी.) के समावेश की जानकारी दी गयी है।
- बालक के सर्वांगीण विकास में सहयोग देने वाले मानवीय, संवैधानिक, ऐतिहासिक, बाल-स्वभाव, वैज्ञानिक आदि भावों को पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया गया है।
- बच्चों की आयु, रुचि और स्तर के अनुकूल भाषा कौशलों व दक्षताओं (शैक्षिक मापदंडों) जैसे :- अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति सृजनात्मकता, भाषा की बात का समावेश है।
- परियोजना कार्यों के संबंध में विशेष जानकारी दी गयी है।
- छात्र को भावी नागरिक बनाने में उच्चतम बौद्धिक कौशलों को (Higher Order Thinking Skills - HOTS) महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

2) पाठ्यपुस्तक के मुख्य सिद्धांत

राष्ट्र का प्राथमिक उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु राज्य सरकार ने एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई - 2009 के सुझावों के आधार पर ए.पी.एस.सी.एफ. - 2011 का निर्माण किया है। इसी ए.पी.एस.सी.एफ - 2011 के मौलिक सूत्रों के आधार पर दसवीं कक्षा की द्वितीय भाषा और प्रथम भाषा की पाठ्यपुस्तकों की रचना हुई है।

इन पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

1. रटंत पद्धति की समाप्ति : -

यह पाठ्यपुस्तकें बच्चों को रटने की नीरस व बोझिली पद्धतियों से बचाये रखती हैं। इन पुस्तकों में ऐसे अंशों का समायोजन है जो बच्चों को रटने की अपेक्षा सोचने-विचारने, विश्लेषण करने और प्रतिक्रिया करने पर बल दिया गया है। इस पुस्तक के पाठों में दिये गये प्रश्न विचारोत्तेजक हैं जो छात्र को सोचने, समझने और तर्क करने के लिए प्रेरित करते हैं।

उदा :- 1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है? कैसे? (पृष्ठ संख्या : 3)

2. राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 34)

3. नीचे दिये गये वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में बताइए। (पृष्ठ संख्या : 26)

4. अपठित गद्यांश, पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (पृष्ठ संख्या : 48)

2. भाषार्जन की न्यूनतम क्षमता से उच्चतम क्षमता की ओर ले जाना :

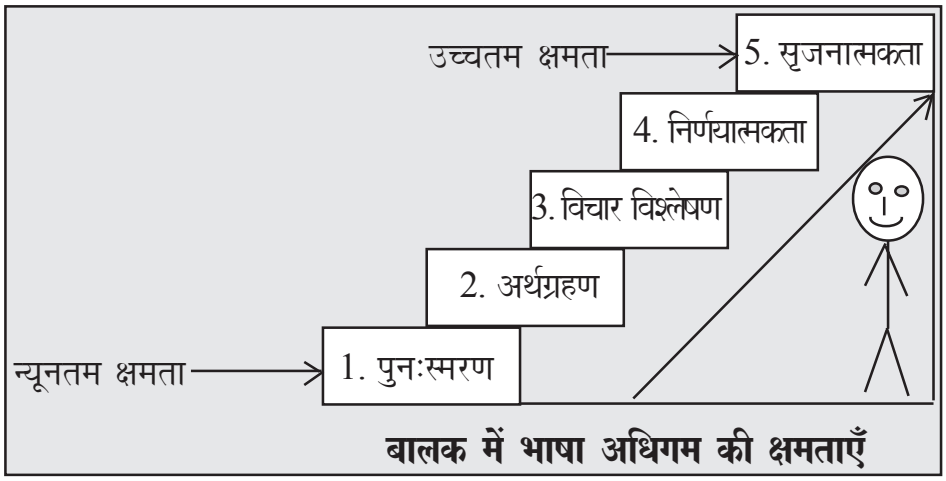

बालक में भाषा अधिगम की क्षमताएँ

3. अर्जित ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक रूप से करना :

पाठ्यपुस्तक एक साधन है, साध्य नहीं। यह अर्जित ज्ञान का उपयोग अपने दैनंदिन जीवन में व्यावहारिक रूप से करने का मार्ग सुगम बनाती है। बच्चे कक्षा में जो ज्ञान अर्जित करते हैं वे उसका उपयोग, विद्यालय से बाहर अर्थात् समाज में स्वतंत्रतापूर्वक कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में दिये गये पढ़ना-समझना, स्वरचना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और परियोजना जैसे अभ्यासों से बालक में इस क्षमता का विकास होता है।

उदा : - 1. विज्ञापन पढ़िए और उस पर चार प्रश्न बनाइए। (पृष्ठ संख्या : 33)

2. जल संरक्षण पर एक पोस्टर बनाइए। (पृष्ठ संख्या : 65)

4. पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर सीखने के अवसर :-

हमारी पाठ्यपुस्तक बच्चों को केवल पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रखती, बल्कि वह उसे अतिरिक्त शिक्षण के लिए संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने, पुस्तकालय का उपयोग करने और समाज के सदस्यों से परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा शिक्षा प्रदान करने के अवसर भी प्रदान करती है। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास बच्चों को इस दिशा में प्रेरित करते हैं। उदा :-

1. वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कोई कहानी ढूँढ़कर लाइए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 9)

2. शांति के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 16)

5. बच्चों के ज्ञान, संस्कृति, स्थानीय कलाओं आदि से संबंधित अंश :-

पाठ्यपुस्तकों में बच्चों के ज्ञान, संस्कृति, स्थानीय कलाओं से संबंधित अंश अवश्य होने चाहिए।

इससे बच्चों में अपनी संस्कृति के प्रति आदर की भावना उत्पन्न होती है, स्थानीय विषयों के प्रति जागरुकता का निर्माण होता है, मानवीय मूल्यों का विकास होता है, विभिन्न कलाओं के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक बालक को इसका भरपूर अवसर प्रदान करती है, उदा :-

1. अपने आसपास के क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकगीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

   (पृष्ठ संख्या : 27)

2. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी?

   (पृष्ठ संख्या : 55)

6. शैक्षिक मापदंडों पर आधारित पाठः-

शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बालक की विभिन्न दक्षताओं के विकास के लिए कुछ मापदंडों का निर्धारण हुआ है।

दसवीं की पाठ्यपुस्तक में ये मापदंड हैं-

I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया (सुनना - बोलना, पढ़ना - लिखना)

II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता (स्वरचना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और प्रशंसा)

III भाषा की बात (शब्द भंडार, व्याकरणांश) के रूप में हैं।

इनके द्वारा बच्चों की विभिन्न दक्षताओं के साथ-साथ सतत् समग्र मूल्यांकन में भी सहायता प्राप्त होती है। इन अभ्यासों के द्वारा बच्चे मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में सक्षम बनते हैं, विभिन्न विधाओं का सृजन कर सकते हैं, संदर्भ पुस्तकें पढ़कर समझ सकते हैं और भिन्न-भिन्न शब्दावली का प्रयोग कर सकते हैं।

उदा : -

1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है? कैसे? (पृष्ठ संख्या : 26)
2. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 49)
3. भक्ति - भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन कीजिए।

   (पृष्ठ संख्या : 42)

7. आकलन की विशेषता :-

पाठ्यपुस्तक के सृजन का एक अन्य विशेष और ठोस आधार है- सतत् समग्र मूल्यांकन। सतत् समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन किया जाता है। इनके आधार पर ही पाठ्यपुस्तक में इकाइयों का विभाजन किया गया है। पाठ के बीच-बीच में दिये जाने वाले प्रश्न भी सतत् समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया में सहयोग देते हैं। पाठ्यपुस्तक के अभ्यास भी पूर्णतः इस मूल्यांकन पर ही आधारित हैं।

3) पाठ्यपुस्तक में छात्रों के लिए सूचनाएँ

I. सूचनाएँ क्यों दी गयी हैं?

पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ के भीतरी भाग में 'छात्रों के लिए विशेष सूचनाएँ' दी गयीं हैं। इसे देने के निम्न उद्देश्य हैं :-

- इसे पढ़ने से पाठ्यपुस्तक के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- पढ़े जाने वाले अंशों का परिचय मिलता है। इससे छात्रों में पाठ्यपुस्तक के प्रति रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न होती है।
- पाठ्यपुस्तक में कुशलताओं के विकास के लिए दिये गये अभ्यासों का परिचय मिलता है।
- अभ्यासों की प्रकृति को समझने में सहायता होती है।
- इससे छात्रों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- विभिन्न अभ्यास कार्य किस प्रकार करने चाहिए। इसकी जानकारी प्राप्त होती है।

II किन अंशों पर आधारित हैं?

- शैक्षिक मापदंडों के अंतर्गत दिये गये अभ्यास कार्यों की व्याख्या की गयी है।
- कौनसा अभ्यास कार्य किस प्रकार करना चाहिए, इसकी जानकारी दी गयी है।
- शब्दकोश व अन्य संदर्भ पुस्तकों के उपयोग की जानकारी दी गयी है।
- गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक का उपयोग न करने का निर्देश दिया गया है।
- परियोजना कार्य से संबंधित जानकारी दी गयी है।

III शिक्षक क्या करें?

- छात्रों को 'छात्रों के लिए विशेष सूचनाएँ' वाला अंश पढ़ने के लिए कहें।
- प्रत्येक बिंदु पर चर्चा करें।
- निष्कर्ष के आधार पर इसकी उपयोगिता बतायें।
- अभ्यास कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें।

4) अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

पाठ्यपुस्तक में अध्यापकों के लिए सूचनाएँ, ''अध्यापकों से ...'' शीर्षक के अंतर्गत दी गयी हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रारूप की जानकारी इसके अंतर्गत दी गयी सूचना से मिलती है। हर अध्यापक के लिए इसे पढ़ना अनिवार्य है।

इसके अंतर्गत दिये गये अंशः

1. कालांशों का विभाजन
2. पाठ की संरचना के प्रमुख अंश और उनके उद्देश्य
3. पठन हेतु और उपवाचक पाठों के उद्देश्यों पर प्रकाश
4. विभिन्न शिक्षण पद्धतियों के उपयोग का उल्लेख
5. विश्लेषणात्मक और विचारात्मक प्रश्नों के उपयोग पर बल
6. शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यासों की प्रकृति, उनके संचालन तथा आकलन की पद्धतियों का उल्लेख
7. परियोजना कार्य के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण
8. वार्षिक योजना और पाठ योजना के नमूनों का प्रस्तुतीकरण
9. भाषा-शिक्षण के सोपानों का उल्लेख
10. विभिन्न संसाधनों और संदर्भ ग्रंथों के उपयोग के निर्देश
11. भाषा-क्रियाकलाप और साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन पर प्रकाश
12. गाइड, स्टडी मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि के उपयोग की मनाही

अध्यापकों को चाहिए कि -

- वे इन सूचनाओं को पढ़ें -
- इनमें दी गयी सूचनाओं के आधार पर अपनी शिक्षण योजना की तैयारी करें।
- कालांशानुसार अपनी वार्षिक योजना और पाठ योजना तैयार करें।
- संसाधनों और संदर्भ ग्रंथों की सूची बना लें।
- छात्रों को स्वलेखन के लिए प्रेरित करें।
- पाठ के अनुरूप विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें।
- छात्रों की क्षमताओं का आकलन शैक्षिक मापदंडों के आधार पर करें।
- भाषाई क्रियाकलापों का क्रियान्वन तत्परता के साथ करें।

5) विषय सूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	विषय
1.	बरसते बादल	कविता	• प्रकृति वर्णन, पर्यावरण
2.	ईदगाह	कहानी	• मानव मूल्य
*	यह रास्ता कहाँ जाता है?	नाटक	• बौद्धिक व नैतिक
3.	हम भारतवासी	कविता	• देशप्रेम, मानव मूल्य
*	शांति की राह में	निबंध (उपवाचक)	• मानव मूल्य
4.	कण-कण का अधिकारी	कविता	• सामाजिकता
5.	लोकगीत	निबंध	• संस्कृति
*	उलझन	कविता (उपवाचक)	• बाल-स्वभाव
6.	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	पत्र	• सृजनात्मकता
*	दो कलाकार	कहानी (उपवाचक)	• मानवमूल्य
7.	भक्ति पद	कविता	• संस्कृति
8.	स्वराज्य की नींव	एकांकी	• देशभक्ति
*	माँ मुझे आने दे!	कविता (पठन हेतु)	• सामाजिकता
9.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा-वृत्तांत	• संस्कृति
*	अपने स्कूल को एक उपहार	कहानी (उपवाचक)	• बाल - स्वभाव
10.	नीति दोहे	कविता	• मानवमूल्य
11.	जल ही जीवन है	कहानी	• सामाजिकता
*	क्या आपको पता है?	निबंध पी.पी.टी. (पठन हेतु)	• सामाजिकता, सृजनात्मकता
12.	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	साक्षात्कार	• वैज्ञानिक
*	अनोखा उपाय	कहानी (उपवाचक)	• मनोरंजन

6) पाठों का निर्माण क्रम - एक अवलोकन

पाठ के अंतर्गत आनेवाले पाठ्य विषयों का क्रम

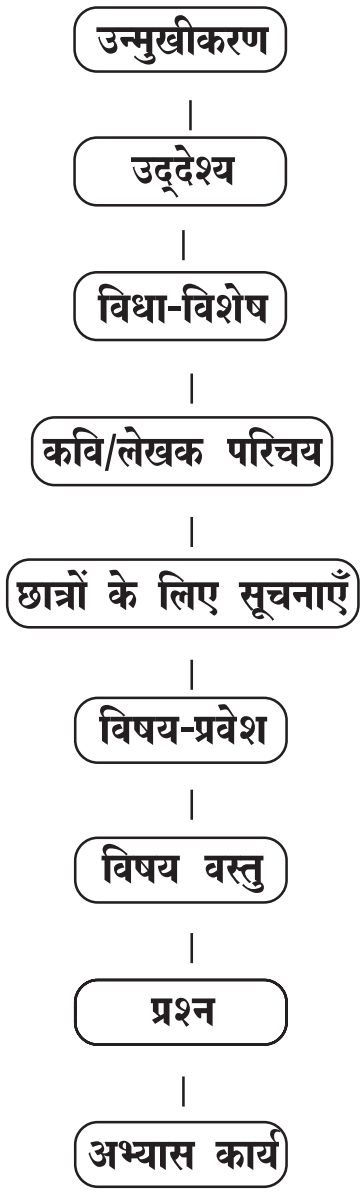

उन्मुखीकरण

(i) पाठ का आरंभ उन्मुखीकरण से होता है।

(ii) छात्रों को प्रेरणा देनेवाले अंशों के द्वारा पढ़ने वाले अंश की ओर रुचि पैदा करना इसका उद्देश्य है।

(iii) इसे पूर्व विषयवस्तु (Pre-Text) कहा जाता है।

(iv) इसमें कुछ प्रश्न दिये गये हैं - जिनके माध्यम से कक्षा में चर्चा कर विषय के प्रति अवबोधन करवाया जाय।

(v) उन्मुखीकरण के अंतर्गत दिये गये प्रश्नों के अलावा कुछ अन्य प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

उद्देश्य

(i) हर एक पाठ में विषयवस्तु के अनुसार उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

(ii) उद्देश्य के द्वारा बालकों में विषयवस्तु के बारे में अवबोध कराया जाता है।

(iii) बच्चों को पाठ पढ़ने से पहले ही उद्देश्य से अवगत कराने पर विषयवस्तु के प्रति रोचकता उत्पन्न कर सकते हैं।

विधा - विशेष

(i) पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार की विधाओं के आधार पर पाठ रखे गये हैं।

(ii) इसमें कविता, कहानी, निबंध, पत्र, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार आदि विधाओं पर पाठ दिये गये हैं।

(iii) बच्चों को साहित्य की विविध विधाओं से परिचय कराना इसका उद्देश्य है।

कवि परिचय/लेखक परिचय

(i) जहाँ तक हो सके लेखक व कवि के जीवन काल एवं उनके साहित्यिक कृत्यों पर प्रकाश डाला गया है।

(ii) दिये गये अंशों के अलावा अतिरिक्त बिंदुओं की जानकारी प्रदान करें।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

(i) हर एक पाठ में इसकी विधा के अनुसार बच्चों के लिए सूचनाएँ दी गयी है।

(ii) ज्ञानात्मक चर्चा में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सूचनाएँ दी गयीं हैं।

(iii) इनके कारण छात्र अपने आपको अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

(iv) इसी को Cognitive Apprentiship कहते हैं जिसका अर्थ हैं- ज्ञानात्मक चर्चा में भाग लेना।

विषय प्रवेश

(i) इसमें पाठ के शिक्षण से पूर्व छात्रों को विषय के प्रति ज्ञान प्रदान करने के लिए पाठ का मूल प्रतिबिंब दर्शाया जाता है।

(ii) इसे Schema (विषय प्रवेश) कहते हैं। अर्थात् पढ़े जानेवाले अंश पर कल्पना करना और चर्चा में भाग लेने के लिए तैयार रहना इसका उद्देश्य है।

विषयवस्तु

(i) पाठ्यपुस्तक में हर एक पाठ गुणवत्तापूर्ण (Potential Text), क्षमतापूर्ण है।

(ii) हर एक विषय अर्थपूर्ण चर्चा करने के अनुकूल है।

प्रश्न

(i) पाठ के बीच-बीच में संबंधित अंशों के बारे में चर्चा करने के लिए कुछ खंड प्रश्न दिये गये हैं।

(ii) इन प्रश्नों के द्वारा विषयवस्तु पर विस्तृत रूप से चर्चा करना चाहिए।

(iii) चिंतन (Thinking), प्रतिक्रिया (Reflexion), सहभागिता (Participation), अभिव्यक्ति (Expression) के लिए ये प्रश्न दिये गये हैं।

(iv) ये प्रश्न अंतर व्यवहार (Interaction) के लिए भी दिये गये हैं।

अभ्यास - कार्य

- हर पाठ में शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्य दिये गये हैं।
- ये अभ्यास - कार्य तीन मुख्य शीर्षकों में विभाजित हैं -
  - I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया
  - II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता
  - III भाषा की बात

I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया**

⇒''अ'' उपशीर्षक के अंतर्गत सुनो-बोलो के प्रश्न हैं।

⇒''आ'' ''इ'' और ''ई'' के अंतर्गत पढ़ना - लिखना के प्रश्न है।

II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता**

⇒''अ'' के अंतर्गत स्वरचना - तीन - चार पंक्तियों में उत्तर लिखने से संबंधित प्रश्न

⇒''आ''के अंतर्गत स्वरचना - निबंधात्मक प्रश्न (5-8)

⇒''इ''के अंतर्गत सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रश्न हैं।

⇒''ई''के अंतर्गत प्रशंसा के प्रश्न हैं।

III **भाषा की बात**

''अ'' शब्द भंडार के प्रश्न।

''आ'' शब्द संबंधी व्याकरणांश के प्रश्न।

''इ'' शब्द संबंधी व्यावहारिक व्याकरण के प्रश्न।

''ई'' वाक्य संबंधी, व्यावहारिक व्याकरण के प्रश्न हैं।

परियोजना कार्य

- इस में उपर्युक्त तीन शैक्षिक मापदंडों से संबंधी कृत्य दिये गये हैं जो बच्चों को व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हैं। यह बात ध्यान में रखें कि परियोजना में तीन शैक्षिक मापदंडों का समावेश है, परियोजना कार्य शैक्षिक मापदंड नहीं है।

- परियोजना कार्य का उद्देश्य बच्चों के अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना और खोजबीन (सर्वेक्षण) जैसी भावनाओं का विकास करना है।

7) नवीन पाठ्यपुस्तक के संसाधन

- शब्दकोश
- देशभक्ति गीत
- लोकगीत
- कहानियाँ - वर्षा - बादल संबंधी
- ग्रामीण जीवन की जानकारी
- वैज्ञानिक संबंधी विषयों की जानकारी
- निबंध पुस्तकें
- महापुरुषों की जीवनियाँ
- पर्यावरण संरक्षण, जागरुकता संबंधी नारें, कथाएँ, लेख, गीत, कविता आदि
- मुहावरे व लोकोक्ति, सूक्तिकोश
- जीवन संघर्ष की कहानियाँ
- स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र एवं जीवनियाँ
- बधाई संदेश (ग्रीटिंगकार्ड), प्रशंसा पत्र आदि बनाने की जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- भारत के दर्शनीय स्थलों की जानकारी से संबंधित पत्रिकाएँ और पुस्तकें
- नदियों के बारे में जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- पेड़-पौधों की कविताएँ, गीत, चित्र
- राष्ट्रीय एवं धार्मिक त्यौहारों से संबंधित पुस्तकें
- चित्रकला और कलाकारों के बारे में जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- प्राकृतिक सौंदर्य के चित्र (सूर्योदय, सूर्यास्त, हरितप्रदेश आदि)
- कृषक जीवन की कथाएँ
- प्रदर्शन संबंधी विवरण

8. शैक्षिक मापदंड

नवीन पाठ्यपुस्तक का मूल उद्देश्य रटंत विद्या की समाप्ति है। ये पुस्तकें बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती हैं। आखिर इन पुस्तकों में ऐसे कौन से लक्षण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि ये अपने उपर्युक्त उद्देश्यों पर खरी उतरती हैं। इसकी प्रतिपुष्टि हमें इसमें निहित 'शैक्षिक मापदंडों' से होती है। ये शैक्षिक मापदंड बच्चों में सुनकर प्रतिक्रिया करने, धाराप्रवाह के साथ पढ़कर समझने, अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने, विभिन्न विधाओं का सृजन करने, किसी विषय या तथ्य का महत्व समझने, नए-नए शब्दों की जानकारी और उनका वाक्यों में प्रयोग करने तथा व्यावहारिक रूप में व्याकरण अंशों को समझने जैसी विभिन्न क्षमताओं का विकास करने में सहायक हैं।

शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्य इस प्रकार हैं -

I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया

II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

III भाषा की बात

9) पाठ्यपुस्तक में परियोजना

बच्चों के अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ने तथा बच्चों को निरीक्षण और खोजबीन (सर्वेक्षण) जैसी भावनाओं के विकास के लिए नवीन पाठ्यपुस्तक में परियोजना कार्य जोड़े गये हैं। इनमें विभिन्न विषयों से संबंधित अलग-अलग परियोजना कार्य दिये गये हैं जो सर्वेक्षण, संकलन, संग्रहण और प्रस्तुतीकरण की क्षमताओं का विकास करते हैं।

उदा :- 1) प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रहण कीजिए।

2) शांती के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।

3) 'जल संरक्षण' पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

परियोजनाएँ दो प्रकार की हैं - वैयक्तित परियोजना और सामूहिक परियोजना। बच्चों के परियोजना कार्यों का आकलन समाचार संकलन, प्रतिवेदन लेखन तथा प्रस्तुतीकरण के आधार पर करना चाहिए।

नवीं कक्षा

क्रम संख्या	पाठ का नाम	परियोजना कार्य
1.	जिस देश में गंगा बहती है।	तालिका में दिए गए राष्ट्रीय चिह्नों के नाम लिखिए किसी एक का चित्र उतारकर 5 वाक्य लिखिए
2.	गाने वाली चिड़िया	वर्ग पहेली में छिपे पक्षियों के नाम पहचानिए। किसी एक पक्षी के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
3.	बदले अपनी सोंच	पर्यावरण पर दिया गया कोई भाषण लेख संकलन कीजिए।
4.	प्रकृति की सोंच	सोहनलाल द्विवेदी के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए। उनकी कोई एक कविता ढूँढ़कर लिखिए।
5.	फुटबॉल	वर्ग पहेली छिपे खेलों के नाम छिपे है उन्हें पहचानकर किसी एक के बार में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
6.	बेटी के नाम पत्र	बाल अधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
7.	मेरा जीवन	सुभद्रा कुमारी चौहान की एक कविता संग्रहित कीजिए।
8.	यक्ष प्रश्न	पंचतंत्र की किसी एक नीति परक कहानी नीतिपरक कहानी का संग्रह कीजिए।
9.	रमज़ान	किसी एक व्यंजन बनाने की विधि पता कीजिए और लिखिए
10.	अमरवाणी	कुछ दोहे संकलित कीजिए
11.	सुनीता विलियम्स	दूसरों द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गये उपग्रहोंं की जानकारी इकट्ठा कर एक उपग्रह के बारे में लिखिए।
12.	जागो ग्राहक जागो	जल जल संरक्षण के उपाय के विषय में दिए जाने विज्ञापनों का संग्रह कीजिए।

दसवीं कक्षा

क्रम संख्या	पाठ का नाम	परियोजना कार्य
1.	बरसते बादल	प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए।
2.	ईदगाह	वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर सम्मान के प्रति कोई कहानी लिखिए।
3.	हम भारतवासी	शांति के पथ पर समर्पित किसी महान् व्यक्ति जानकारी इकट्टा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
4.	कण-कण का अधिकारी	विश्व श्रम दिवस के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
5.	लोकगीत	पाठ में दिए गए चित्र के आधार पर भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा एक प्रहसन नाटक अपने पुस्तकालय व अन्य स्त्रोतों से इकट्ठा कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
6.	अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	पहले पाठ से पाँचवे पाठ तक आए चित्रों में अपने मनपसंद चित्र के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
7.	भक्ति पद	भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती है। इस भावना को दर्शाने वाली किसी कविता का संग्रह कीजिए।
8.	स्वराज्य की नींव	देशभक्ति से संबंधित किसी एकांकी का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।
9.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा-वृत्तान्त विधा की जानकारी प्राप्त कीजिए। उसकी सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।
10.	नीति दोहे	पाठ-पुस्तक में आए नीति वाक्यों में आपको मनपसंद 10 नीति वाक्यों की सूची बनाइए।
11.	जल ही जीवन है	जल संरक्षण पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
12.	धरती के सवाल अंतरिक्षके जवाब	छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्य पुस्तकों के मुख पृष्ठों में (कवर-पेज) आपको कौनसा मुख पृष्ठ बहुत अच्छा लगता है? अपने विचार लिखिए।

परियोजना कार्य का आयोजन

- पाठयोजना कार्य 5 वें कालांश में गृहकार्य के रूप में दें।
- परियोजना कार्य को कक्षा-कक्ष में पढ़वायें।
- परियोजना कार्य कैसे किया जाय, इसके बारे में समझायें।
- समाचार एकत्र करना, संबंधित स्त्रोतों की जानकारी दें।
- समाचार एकत्र करने के लिए आवश्यक प्रश्नवाली बनायें।
- परियोजना कार्य को समूह में बाँटें, और किसे करना है इसकी सूचना दें।
- जो समाचार एकत्र किया गया है, उस पर प्रतिवेदन बनाने के लिए सूचनाएँ दें।
- अंतिम कालांश में परियोजना कार्य का प्रदर्शीन करवायें। (प्रतिवेदन सामूहिक या वैयक्तिक रूप से पढवाएँ)
- भाव, विषय, वाक्य निर्माण, शब्दविन्यास, अक्षर-दोष इन पर चर्चा करते हुए प्रतिवेदन सुधारें।
- अंत में इस परियोजना कार्य द्वारा अध्यापक प्रश्न पूछें।
- उपरोक्त अंशों के आधार पर छात्रों को अंक प्रदान करें।

अंक विभाजन - सूचक

- समाचार एकत्र करना - 1 अंक
- प्रतिवेदन लिखना - 2 अंक
- प्रदर्शन या प्रतिक्रिया - 2 अंक

Note : रचनात्मक मूल्यांकन में परियोजना कार्य एक अंश है। इसके लिए एक नोट बुक रखी जाय। कोई अधिकारी या जांचकर्ता आने पर उन्हें परियोजना कार्य पुस्तिका दिखायें।

10) मूल्यांकन

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक में परिवर्तन के साथ ही मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवर्तन देखने को मिलते हैं। नवीन मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों का मूल आधार है। सतत् समग्र मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को बोझरहित बनाना है। और मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम के अंतर्गत लाना है। इसके लिए यह छात्र की अपेक्षित दक्षताओं और उनकी समग्रता के आधार पर आकलन पर बल देता है।

इससे पूर्व जो आकलन किया जाता था वह इकाई परीक्षा के रूप में (वर्ष में चार बार) और सत्र परीक्षा के रूप में (वर्ष में तीन बार) किया जाता था। यह मूल्यांकन छात्रों की सभी क्षमताओं के आकलन में असमर्थ दृष्टिगोचर होता था। एक इकाई परीक्षा के पश्चात् फिर से आकलन अगली इकाई परीक्षा में ही होता था। बीच में किसी प्रकार का आकलन नहीं किया जाता था। किंतु सतत् समग्र मूल्यांकन की प्रणाली को अपनाने से बालकों की सभी क्षमताओं के निरंतर आकलन में आसानी हो गयी है। हमारी पाठ्यपुस्तक का हर पाठ आरंभ से लेकर (उन्मुखीकरण) अंत (परियोजना कार्य) तक इसी पर आधारित है।